

संकल्पना-रचना (कहानी लेखन)

परिभाषा

विशेषताएँ

विधियाँ

## कहानी-लेखन (Story-Writing)की परिभाषा

जीवन की किसी एक घटना के रोचक वर्णन को 'कहानी' कहते हैं।

कहानी सुनने, पढ़ने और लिखने की एक लम्बी परम्परा हर देश में रही है; क्योंकि यह मन को रमाती है और सबके लिए मनोरंजक होती है। आज हर उम्र का व्यक्ति कहानी सुनना या पढ़ना चाहता है यही कारण है कि कहानी का महत्व दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। बालक कहानी प्रिय होते हैं। बालकों का स्वभाव कहानियाँ सुनने और सुनाने का होता है। इसलिए बड़े चाव से बच्चे अच्छी कहानियाँ पढ़ते हैं। बालक कहानी लिख भी सकते हैं। कहानी छोटे और सरल वाक्यों में लिखी जाती है।

कहानी लिखना एक कला है। हर कहानी-लेखक अपने ढंग से कहानी लिखकर उसमें विशेषता पैदा कर देता है। वह अपनी कल्पना और वर्णन-शक्ति से कहानी के कथानक, पात्र या वातावरण को प्रभावशाली बना देता है। लेखक की भाषा-शैली पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है कि कहानी कितनी अच्छी लिखी गई है।

**कहानी लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें-**

- (i) दी गई रूपरेखा अथवा संकेतों के आधार पर ही कहानी का विस्तार करें।
- (ii) कहानी में विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों को संतुलित विस्तार दें। किसी प्रसंग को न अत्यंत संक्षिप्त लिखें, न अनावश्यक रूप से विस्तृत।
- (iii) कहानी का आरम्भ आकर्षक होना चाहिए ताकि पाठक का मन उसे पढ़ने में रम जाए।
- (iv) कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा प्रवाहमयी होनी चाहिए। उसमें क्लिष्ट शब्द तथा लम्बे वाक्य न हों।
- (v) कहानी को उपयुक्त एवं आकर्षक शीर्षक दें।
- (vi) कहानी का अंत सहज ढंग से होना चाहिए।

यहाँ ध्यान देने की बात है कि कहानी रोचक और स्वाभाविक हो। घटनाओं का पारस्परिक संबंध हो, भाषा सरल हो और कहानी से कोई-न-कोई उपदेश मिलता हो।

अंत में, कहानी का एक अच्छा शीर्षक या नाम दे देना चाहिए।

## कहानी की प्रमुख विशेषताएँ

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

- (1) आज कहानी का मुख्य विषय मनुष्य है, देव या दानव नहीं। पशुओं के लिए भी कहानी में अब कोई जगह नहीं रही। हाँ, बच्चों के लिए लिखी गयी कहानियों में देव, दानव, पशु-पक्षी, मनुष्य सभी आते हैं। लेकिन श्रेष्ठ कहानी उसी को कहते हैं,

जिसमें मनुष्य के जीवन की कोई समस्या या संवेदना व्यक्त होती है। देवी, देवताओं, दानवों और पशु-पक्षियों का समय अब समाप्त हो गया।

(2) पहले कहानी शिक्षा और मनोरंजन के लिए लिखी जाती थी, आज इन दोनों के स्थान पर कौतूहल जगाने में जो कहानी सक्षम हो, वही सफल समझी जाती है। फिर भी, मनोरंजन आज भी साधारण पाठकों की माँग है। कौतूहल और मनोरंजन से अधिक हम कहानियों में मनुष्य की नयी संवेदनाओं की खोज करते हैं।

(3) आज की कहानियों में भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर अधिक बल दिया जाता है। आज का मनुष्य यह जानने लगा है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है, वह किसी के हाथ का खिलौना नहीं। अतएव, आज की कहानियों का आधार जीवन का संघर्ष है।

(4) प्राचीन कहानियों का उद्देश्य रस का परिपाक था। आज की कहानी का लक्ष्य विविध प्रकार के चरित्रों की सृष्टि करना है। व्यक्ति-वैचित्र्य दिखाना उसका मुख्य उद्देश्य है। यही कारण है कि आज कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्व अधिक बढ़ा है।

(5) पहले जहाँ कहानी का लक्ष्य घटनाओं का जमघट लगाना होता था, वहाँ आज घटनाओं को महत्व न देकर मानव-मन के किसी एक भाव, विचार और अनुभूति को व्यक्त करना है। प्रेमचन्द ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट लिखा है, "कहानी का आधार अब घटना नहीं, अनुभूति है।"

(6) प्राचीन कहानी समष्टिवादी थी। सबके हितों को ध्यान में रखकर लिखी जाती थी। आज की कहानी व्यक्तिवादी है, जो व्यक्ति के 'मनोवैज्ञानिक सत्य' का उद्घाटन करती है। मनोवैज्ञानिकों ने मानव-मन के जिन स्तरों की खोज की है, उन स्तरों की गहराई में उतरकर मानवीय सत्य को खोलकर उपस्थित करना आज के कहानीकार का मुख्य लक्ष्य हो गया है।

(7) पहले की अपेक्षा आज की कहानी भाषा की सरलता पर अधिक बल देती है; क्योंकि उसका उद्देश्य जीवन की गाँठों को खोलना है।

(8) पुरानी कहानियाँ अधिकतर सुखान्त होती थीं, किन्तु आज की कहानियाँ मनुष्य की दुःखान्तक कथा को, उसकी जीवनगत समस्याओं और अन्तहीन संघर्षों को अधिक-से-अधिक प्रकाशित करती हैं।

सारांश यह है कि आज कहानी जीवन की प्रतिच्छाया के रूप में लिखी जा रही है। यह सब कुछ होते हुए भी सामान्य पाठक कहानी में मनोरंजन के तत्वों को भी ढूँढता है।

## कहानी-लेखन की विधियाँ

कहानी का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार होने के कारण छात्रों से भी आशा की जाती है कि वे भी इस ओर ध्यान दें और कहानी लिखने का अभ्यास करें; क्योंकि इससे उनमें सर्जनात्मक शक्ति जगती है। इसके लिए उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे चार विधियों से कहानी लिखने का अभ्यास करें

(1) कहानी की सहायता या आधार पर कहानी लिखना, (2) रूपरेखा के सहारे कहानी लिखना, (3) अधूरी या अपूर्ण कहानी को पूर्ण करना, (4) चित्रों की सहायता से कहानी का अभ्यास करना

### रूपरेखा (संकेतों) के सहारे कहानी लिखना

रूपरेखा या दिये गये संकेतों के आधार पर कहानी लिखना कठिन भी है, सरल भी। कठिन इसलिए कि संकेत अधूरे होते हैं। इसके लिए कल्पना और मानसिक व्यायाम करने की आवश्यकता पड़ती है। सरल इसलिए कि कहानी के संकेत पहले से दिये रहते हैं। यहाँ केवल खानापूरी करनी होती है। लेकिन, इस प्रकार की कहानी लिखने के लिए कल्पना से अधिक काम लेना पड़ता है। ऐसी कहानी लिखने में वे ही छात्र अपनी क्षमता का परिचय दे सकते हैं, जिनमें सर्जनात्मक और कल्पनात्मक शक्ति अधिक होती है। इसके लिए छात्र को संवेदनशील और कल्पनाप्रवण होना चाहिए। एक उदाहरण इस प्रकार है-

## संकेत

एक किसान के लड़के लड़ते- किसान मरने के निकट- सबको बुलाया- लकड़ियों को तोड़ने को दिया- किसी से न टूटा- एक-एक कर लकड़ियाँ तोड़ी- शिक्षा। उपर्युक्त संकेतों को पढ़ने और थोड़ी कल्पना से काम लेने पर पूरी कहानी इस प्रकार बन जायेगी-

## एकता

एक था किसान। उसके चार लड़के थे। पर, उन लड़कों में मेल नहीं था। वे आपस में बराबर लड़ते-झगड़ते रहते थे। एक दिन किसान बहुत बीमार पड़ा। जब वह मृत्यु के निकट पहुँच गया, तब उसने अपने चारों लड़कों को बुलाया और मिल-जुलकर रहने की शिक्षा दी। किन्तु लड़कों पर उसकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब किसान ने लकड़ियों का गट्ठर माँगाया और लड़कों को तोड़ने को कहा। किसी से वह गट्ठर न टूटा। फिर, लकड़ियाँ गट्ठर से अलग की गयीं। किसान ने अपने सभी लड़कों को बारी-बारी से बुलाया और लकड़ियों को अलग-अलग तोड़ने को कहा। सबने आसानी से ऐसा किया और लकड़ियाँ एक-एक कर टूटती गयीं। अब लड़कों की आँखें खुलीं। तभी उन्होंने समझा कि आपस में मिल-जुलकर रहने में कितना बल है।

सीख—एकता में शक्ति होती है।

## संकेत

एक सेठ का बंदर पालना—सेठ की बंदर से दोस्ती—सेठ का गहरी नींद में सोना—सेठ की नाक क ऊपर मक्खी बैठना—बंदर का पत्थर से मक्खी को मारना—सेठ की नाक टूटना—सेठ द्वारा बंदर को मारकर भगाना

## मूर्ख बन्दर

एक था सेठ। उसने एक बन्दर पाला था। बन्दर सेठ से बड़ा हिला-मिला था। सेठ बन्दर को बहुत बुद्धिमान समझता था, पर बन्दर तो बन्दर ही ठहरा। एक दिन की बात है। गर्मी के दिन में सेठ गहरी नींद सो रहा था। बन्दर उसे पंखा झल रहा था। एक मक्खी उड़कर आयी और सेठ के शरीर पर बैठ गयी। बन्दर बार-बार उस मक्खी को पंखे से उड़ाता, पर मक्खी बार-बार सेठ के शरीर पर बैठ जाती।

अन्त में बन्दर से नहीं रहा गया। बाहर से वह पत्थर का एक बड़ा-सा टुकड़ा ले आया। इस बार मक्खी सेठ की नाक पर बैठी। बन्दर ने उसी समय पत्थर के टुकड़े से उसे जोर से मारा। मक्खी तो उड़ गयी, पर बेचारे सेठ की नाक टूट गयी। उनका एक दाँत भी टूट गया और वे बेहोश हो गये।

सीख—मूर्ख लोगों के साथ दोस्ती और दुश्मनी दोनों हानिकारक हैं।